पाठ 4. कर्मवीर

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में निर्णय-क्षमता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे महत्वपूर्ण मुद्दों को समझकर उनसे रचनात्मक रूप से निपटने में सक्षम हो सकें। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की यह कविता भाग्यवाद की जकड़न में जकड़े अंधविश्वासी समाज को कर्म में ही विश्वास रखने की प्रेरणा देती है और नयी पीढ़ी को नयी और सही राह दिखाती है।

पाठ का सार

कर्मवीर कविता में उन लोगों के विषय में हरिऔध जी ने बात की है जो अपने जीवन को अपनी और सही शर्तों पर जीते हैं। ये लोग कर्म में विश्वास करते हैं, भाग्यवादिता में नहीं। ये अपने जीवन की राह स्वयं बनाते हैं। ये लोग छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित नहीं होते, बल्कि शांत रहकर बड़े से बड़ा काम कर लेते हैं। आज का काम कल पर न छोड़ने वाले ये कर्मयोगी ही जीवन में फलते-फूलते हैं। रुकावटें इनके जीवन में भी आती हैं लेकिन इन रुकावटों से इनका मनोबल नहीं टूटता। ये इन्हें चुनौतियों की तरह लेते हैं। इन लोगों को संकट के समय दूसरों का मुँह ताकने की आदत नहीं होती, ये लोग तो बाकी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन और साहित्य के बारे में संक्षेप में बताते हुए भाग्यवाद की धारणा को मज़बूत करने वाले तत्वों की चर्चा करें। उसके बाद कविता के वाचन रूपों से गुज़रते हुए अर्थग्रहण व कवि के विचारों का स्पष्टीकरण करें। शब्दार्थ ग्रहण की प्रक्रिया बीच-बीच में यथाप्रसंग की जा सकती है।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - शरीर के विभिन्न अंगों के नाम कई मुहावरों में आते हैं। कुछ नाम स्वयं बताएँ तथा कुछ उदाहरण बच्चों को देने के लिए उत्प्रेरित करें।
  - अनेकार्थी शब्दों की परिभाषा व उदाहरण दें। इस प्रकार के शब्दों के अलग-अलग अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा समझाएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - कर्मवीरों की श्रेणी में खेतों में काम करने वाले किसानों व मज़दूरों, दफ़्तरों में काम करने वाले कर्मचारियों, कल-कारखानों में काम करने वाले लोगों, सब्ज़ी मंडी में सब्ज़ी बेचने वाले लोगों पर चर्चा हो सकती है। भाग्यवादियों में लॉटरी, सट्टा खेलने वाले लोगों, पंडितों या ज्योतिषियों से पूछ-पूछकर कदम रखने वाले लोगों के उदाहरण दिए जा सकते हैं।
  - कर्मठता के संदर्भ में 'पढ़े तो पास हुए' जैसे उदाहरण देकर बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर दें। 'हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फ़ारसी क्या' जैसे उदाहरणों के माध्यम से बच्चों में कर्म पर विश्वास बढ़ाएँ।